Understanding Geo-politics for International Business" on May 26, 2023



व्यापार पर व्याख्यान हुआ आयोजित

हारा न्युज ब्युरो दन ।

ट्रीय पटल पर भू-राजनीति ही देशों के प्रार्थिक संबंधों को प्रभावित करती हैं गैजूदा दौर में रूस-यूकेन युद्ध इसका सटीक उदहारण है। यह बात भू-ति एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर जेत व्याख्यान में वतौर मुख्य अतिथि पत्रकार मनीष झा ने छात्रों से कही। क्फाई विवि में अंतर्राष्ट्रीय संबंध और ान कार्यालय के द्वारा आयोजित ज्म में भू-राजनीति एवं अंतर्राष्टीय . पर इसके प्रभाव पर विचार विमर्श व्यरब्यान के तहत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार ान्य पहलुओं पर भी मंथन किया गया। मुख्य वक्ता मनीष झा ने वताया कि ह व्यापार के लिए किसी देश की

व्याख्यान देते मुख्य वक्ता और अन्य लोग।

दौड लगाई।



सरकार के द्वारा मुक्त वाजार को समर्थित करना भी जरूरी होता है। जैसे 1990 के वीच राजनीतिक संबंधों का तनाव व्यापार को प्रभावित तो करता है, लेकिन फ्री टेड एग्रीमेंट दशक में भारत के द्वारा कई आर्थिक सधार इस प्रभाव को काफी हद तक कम कर सकता है और निवेशकों को उनके निवेश को नुकसान न पहुंचने को भी आश्वस्त करता किये गए, जिसके अंतर्गत कई आर्थिक प्रतिवंधों को हटाया गया और भारत ने आर्थिक विकास के क्षेत्र में काफी तेज हैं। कार्यक्रम के अंत में विश्वविद्यालय के वाईस चांसलर डा.रामकरण सिंह ने कहा कि उन्होंने कहा कि आज दुनिया के उन आज के नवोन्मेष और उद्यमता के दौर में देशों को भी मुक्त वाजार की व्यवस्था को अपनाना पड़ा, जो समाजवाद और साम्यवाद छात्रों में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की समझ होना

काफी आवश्यक है। यह समझ उन्हें पर आधारित थे। श्रोताओं के एक सवाल का वैश्विक वाजार से लाभ लेने के लिए समर्थ जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि दो देशों के वनाती है। डा.रामकरण ने विदेश में अपने

एक अनुभव को साझा करते हुए कहा कि छात्रों को भू-राजनीति के साथ-साथ भू-धार्मिक संबंधों को भी समझने की भी जरूरत है। भारत वसुधैव कुटुंवकम की अवधारणा को मानने वाला देश है और यदि छात्र दुनिया के विभिन्न धर्मों का भी थोड़ा ज्ञान रखेंगे तो उन्हें किसी भी देश में काम करने में आसानी होगी।

. इस मौके पर रजिस्ट्रार डा.मोनिका खरोला, डा.राघवेंद्र शर्मा, डा.तपन चंदोला, प्रो.अमित दास सहित विवि के प्रोफेसर शोधकर्ता व छात्र उपस्थित थे।

दो में से एक महिला कर्मचारी महसूस करती है यौन उत्पीडनः डा.शर्मा

देहरादून। दून विश्वविद्यालय में शुक्रवार को छात्राओं और शिक्षकों के लिए महिला कर्मचारियों के साथ कार्य क्षेत्र में यौन उत्पीदन की जामकलना और नौजना जिल्ला को लो कर्मचारियों के साथ कार्य क्षेत्र में यौन उररीइन की जागरूकता और कौशल बिकास को लेकर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में प्रोग्रेसिव यूनिवर्स ऑफ एनएलपी और सामाजिक संस्था फोरगिकोस फाउंडेशन सोसायटी के संस्थापक डा.पवन शर्मा (द साइकेडेलिक) ने बताया कि कार्यालयों में दो में से एक महिला कर्मचारी अपने कार्य क्षेत्र में यौन उत्पीड़न को किसी ना किसी रूप में अनुभव करती है। यह उत्पीड़न कई तरह के हो सकते हैं। जैसे, मौखिक, शारीरिक, मानसिक व ऑनलाइन आदि। उत्पीडन की शिकार महिला रा जन्म, नगावनम, चारावरम, मारात्मम व जानलाइन जाव,। उत्पार्वन की शिकार माहला कर्मचारी को तनाव, हताशा, अवसाद, चिंता, कुंठा, आधात, शर्मिंदगी जैसी कई मानसिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस तरह की हरकत उनके पेश्रेवर उत्पादन क्षमता पर भी नकारात्मक प्रभाव डालती है। डा.शर्मा ने ऐसी परिस्तिथियों से बचने के उपाय बताए और ऐसी घटनाओं के आघात से उबरने के लिए मानसिक उपायों को भी बताया। इसके साथ ही कार्यक्षेत्र बटनाओं के आवात से उबरने का लगू मानासक उपाया को मा पताया। इसक साथ हा कायसत में यौन उत्पीड़न के लयाब कानून (पॉश एक्ट) 2013 के बारे में भी जानकारी दी और प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। उन्होंने वताया कि पेशेवर कोर्स करने वाले छात्र जल्दी

ही किसी पेशे में जुड़ कर कार्य क्षेत्र की चुनौतियों का सामना करेंगे। ऐसे में उन्हें सही समय पर आने वाली चुनौतियों के वारे में वताना और उनके समाधान व बँचाब को बताने का सही समय पेशेवर शैक्षणिक संस्थानों का माहौल है। उन्होंने क्ताया कि फोरगिक्नेस फाउंडेशन सोसायटी महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों के बचाब के लिए निशुल्क कानूनी सलाह और मदद प्रदान करती है। कार्यशाला में प्रोफेस्स सरेखा इंगवाल, डा.चेतना पोखरियाल, डा.सविता कर्नाटक, सौरभ जोशी व प्रीति जोशी मौजूद रही।



हिल मौस व्याख यहां युवा अवग परिव विशे कुल भागी सकरे प्रो.(र डा.प्र

मे

हि

देहर

क

के

से

20

लो जी

प्रक

को

ग्राफि

्रुक्फ़ाई विवि में भू-राजनीति एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर हुआ व्याख्यान

अंत में विश्वविद्यालय के वाईस चांसलर डॉ रामकरण सिंह ने कहा कि आज के नवोन्मेष एवं उद्यमता के दौर में छात्रों में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की समझ होना काफी आवश्यक है यह समझ उन्हें वैश्विक बाजार से लाभ लेने के लिए समर्थ बनाती है।

डॉ रामकरण ने विदेश में अपने एक अनुभव को साझा करते हुए कहा छात्रों को

भु-राजनीति के साथ साथ भु- धार्मिक संबंधों को भी समझने की भी जरूरत है। भारत वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा को मानने वाला देश है और यदि छात्र दुनियां के विभिन्न धर्मों का भी थोड़ा ज्ञान रखेंगे तो उन्हें किसी भी देश में काम करने में आसानी होगी।

व्याख्यान में विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, शोधकर्ता सहित बड़ी संख्या में छात्र मौजुद रहे। इस कार्यक्रम में रजिस्ट्रार डॉ मोनिका खरोला, डॉ राघवेंद्र शर्मा डॉ तपन चंदोला एवं प्रोफेसर अमित दास ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज की।



प्रतिबंधों को हटाया गया और भारत ने आर्थिक विकास के क्षेत्र में काफी तेज दौड लगाई। उन्होंने कहा कि आज दुनियां के उन देशों को भी मुक्त बाजार की व्यवस्था को अपनाना पड़ा जो समाजवाद और साम्यवाद पर आधारित थे। कार्यक्रम में मौजुद श्रोताओं के एक सवाल

का जवाब देते हुए उन्होंने कहा दो देशों के बीच राजनीतिक संबंधों का तनाव व्यापार को प्रभावित तो करता है लेकिन फी टेड एग्रीमेंट इस प्रभाव को काफी हद तक कम कर सकता है और निवेशकों को उनके निवेश को नुकसान न पहंचने को भी आश्वस्त करता है। कार्यक्रम के

देहरादुन, संवाददाता। अंतर्राष्ट्रीय पटल पर भू-राजनीति ही देशों के बीच आर्थिक संबंधों को प्रभावित करती हैं और मौजूदा दौर में रूस यूक्रेन युद्ध इसका सबसे सटीक उदहारण है।

दरसल यह बात भू-राजनीति एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर आयोजित व्याख्यान में बतौर मख्य अतिथि

वरिष्ठ पत्रकार मनीष झा ने छात्रों से कही। इक्फाई विवि में अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं अध्ययन कार्यालय के द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में भू-राजनीति एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर इसके प्रभाव पर गहन विमर्श हुआ। एक विस्तुत व्यख्यान के तहत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कई अन्य पहलुओं पर भी मंथन किया गया। बतौर मुख्य वक्ता झा ने बताया कि वैश्विक व्यापार के लिए किसी देश की सरकार के द्वारा मुक्त बाजार को समर्थित करना भी जरूरी होता है। जैसे 1990 के दशक में भारत के द्वारा कई आर्थिक सधार किये गए जिसके अंतर्गत कई आर्थिक